श्री महावीराय नमः   जैनं जयति शासनम्   श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

जैन संस्कार शिविर
पाठ्यक्रम भाग–3

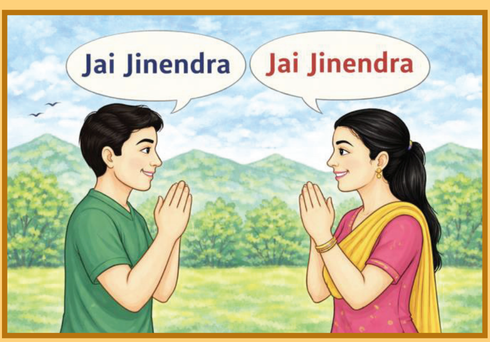

जैन संस्कार शिविर समिति

A step for the Jain youth of tomorrow

संस्करण : 2026

प्रकाशकीय

भारत देश उच्च संस्कृति वाला देश रहा है और इस संस्कृति की उज्ज्वलता बनाये रखने हेतु विभिन्न समाजों में बच्चों व युवाओं को नैतिक व धार्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयास चलते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर, गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म., संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्मचन्द्र जी म., संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से 'जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली' द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय एस. एस. जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। ये शिविर पूर्णरूप से सम्प्रदाय-निरपेक्ष हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक पूज्य गुरु भगवन्तों व विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक बच्चा सूक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बच्चों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

रूपांकन :
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
मुद्रक :
पारस ऑफसैट प्रा. लि., दिल्ली
Email: info@parasoffset.com

श्री मया-मदन-सुदर्शन-प्रकाश-पद्म-नरेश गुरुभ्यो नमः

विषयक्रम

शीर्षक ... पृष्ठ संख्या

सूत्र विभाग

चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र 2

तत्त्व विभाग

श्रावक के 12 व साधु के 5 महाव्रत 4

कर्म आठ 7

प्राण दस 10

लेश्या छः 13

चारित्र पांच 17

प्रत्याख्यान-तप 20

सामान्य ज्ञान

पर्यावरण की सुरक्षा 23

धूम्रपान, शराब एवं ड्रग्स के दुष्परिणाम 25

कथा विभाग

भ. महावीर के जीवन पर आधारित कहानियाँ 28

काव्य विभाग

भजन 32

प्राकृत विभाग

प्राकृत भाषा की वर्णमाला 33

व्यावहारिक वाक्य 34

जैन आगमों के मुख्य सूत्र 35

चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र

मूल पाठः

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥1॥

उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं चं।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥2॥

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥3॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥4॥

एवं मए अभित्थुआ, विहूयरयमला, पहीणजरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥5॥

कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥6॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥7॥

इस पाठ में हम हमारे 24 तीर्थंकरों के गुणों को याद करते हैं। उनकी प्रशंसा करते हैं। उनके नामों का स्मरण करते हैं और हम ऐसी आशा करते हैं कि उनके गुणों का स्मरण करने से हमें पूर्ण आत्मशान्ति, रत्नत्रय की प्राप्ति तथा समाधि लाभ मिलेगा।

भावार्थ :

लोक को उद्योतित करने [चमकाने] वाले, धर्म तीर्थ के कर्त्ता और जिन [राग-द्वेष के विजेता] 24 केवली अरिहंतों [तीर्थंकरों] का कीर्तन करूंगा।

ऋषभ देव और अजित को वंदन करता हूँ। संभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व और चन्द्रप्रभ भगवान् को वन्दना करता हूँ।

सुविधि [पुष्पदन्त], शीतल, श्रेयांस, वासुपुज्य,विमल, अनन्त, धर्मनाथ और शान्तिनाथ भ. को वन्दना करता हूँ।

कुंथुनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिनाथ,अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ तथा वर्धमान [महावीर] को भी वदंना करता हूँ।

पाप मल से रहित, जन्म-मृत्यु से मुक्त, 24 तीर्थंकरों [जिनवरों] की जो मैंने स्तुति की है, वे मुझ पर प्रसन्न हों।

कीर्तन, वन्दन, पूजित किये हुए लोक में उत्तम सिद्ध भ. मुझे आरोग्य [कर्मरोगों से मुक्ति] और समाधि प्रदान करें।

चन्द्र से भी अधिक निर्मल, सूर्य से भी अधिक प्रकाश करने वाले, सागर से भी अधिक गम्भीर, सिद्धभगवान् मुझको सिद्धि [मोक्ष] देवें [प्रदान करें]।

श्रावक के 12 व साधु के 5 महाव्रत

मुख्यव्रत (5)
- अहिंसा अणुव्रत
- सत्य अणुव्रत
- अचौर्य अणुव्रत
- ब्रह्मचर्य अणुव्रत
- अपरिग्रह अणुव्रत

गुणव्रत (3)
- दिशा परिमाण
- उपभोग परिमाण
- अनर्थदंड विरमण

शिक्षा व्रत (4)
- सामायिक
- देशावकासिक
- पौषध
- अतिथि संविभाग

भ. महावीर ने मोक्ष प्राप्त करने के 2 मार्ग बताए हैं। एक है साधुमार्ग और दूसरा है श्रावक मार्ग। भ. ने कहा कि यदि हम कुछ व्रत या नियमों का पालन करते हुए अपना जीवन चलाएंगे तो हम गृहस्थ में रहकर भी अपना कल्याण कर सकते हैं। इन व्रतों व नियमों को श्रावक के 12 व्रतों के नाम से जाना जाता है। इन 12 व्रतों को भी 3 श्रेणी में बांटा गया है। पहले 5 मुख्यव्रत हैं जो कि साधुओं के व्रतों का ही Small रूप हैं। इसमें हमें बहुत सारी Exceptions होती हैं, जबकि साधुओं के लिए इन व्रतों में कोई Exceptions नहीं होती हैं। बाकी के व्रत इन 5 व्रतों की Support व Help के लिए हैं।

जैन श्रावक-श्राविका के 12 व्रत हैं—

पांच अणुव्रत— 1. अहिंसा अणुव्रत, 2. सत्य अणुव्रत, 3. अस्तेय अणुव्रत, 4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत. 5. अपरिग्रह अणुव्रत।

तीन गुणव्रत— 6. दिशा-परिमाण व्रत, 7. भोगोपभोग-परिमाण व्रत, 8. अनर्थदण्ड-विरमण व्रत।

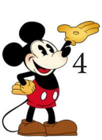

चार शिक्षाव्रत— 9. सामायिक व्रत, 10. देशावकाशिक व्रत, 11. पौषध व्रत, 12. अतिथि-संविभाग व्रत।

जैन साधु-साध्वी के पांच महाव्रत हैं—

1. अहिंसा महाव्रत,2. सत्य महाव्रत, 3. अस्तेय महाव्रत, 4. ब्रह्मचर्य महाव्रत, 5. अपरिग्रह महाव्रत।

पाप-कार्यों से आत्मा की रक्षा करने के लिए तथा आत्मा के उत्थान के लिए ग्रहण करने वाले नियम 'व्रत' कहलाते हैं।

अब हम इन व्रतों को परिभाषित करते हैं।

अहिंसा अणुव्रतः— इस व्रत में हम प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम किसी भी जीव को, जिसने कोई अपराध नहीं किया है, उसे हम जान बूझकर नहीं मारेंगे और न ही किसी को मारने के लिए कहेंगे। (यहां पर भगवान् ने हमें (श्रावकों के लिए) अपना जीवन निर्वाह करने के लिए एकेन्द्रिय जीवों जैसे भोजन के लिए वनस्पतिकाय आदि के जीवों की हिंसा की छूट दी है) परन्तु यहां पर भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि एकेन्द्रिय जीवों (पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति) की भी अनावश्यक हिंसा न हो। वह भी कम से कम हो। हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि वे भी हमारे जैसे जीव हैं और उनकी हिंसा से उन्हें भी वेदना होती है।

सत्य अणुव्रतः— हमें ऐसा असत्य यानि झूठ नहीं बोलना चाहिए, जिससे सामने वाले को किसी प्रकार की पीड़ा या कष्ट हो। हमें अपने हर Action में सच्चाई का पालन करना चाहिए।

अस्तेय अणुव्रतः— अस्तेय का अर्थ है कि बिना इजाजत के किसी अन्य की वस्तु को लेना या उठाना। अतः हमें ऐसी चोरी आदि नहीं करनी, जिससे हमारी निन्दा हो या बदनामी हो और Punishment मिलने का भय हो।

ब्रह्मचर्य अणुव्रतः इस व्रत का अर्थ है, शादी से पूर्व पूर्ण ब्रह्मचर्य (Celibacy) का पालन करना और शादी के बाद अपनी Wife या Husband के सिवाय

किसी अन्य से कोई भी अवैध संबंध (Illicit Relation) नहीं रखना। और न ही किसी अन्य को कामुकता की दृष्टि से देखना।

अपरिग्रह अणुव्रतः— इस का अर्थ है कि हमें कम से कम परिग्रह (Possession) रखना चाहिए। जैसे Ornaments, Houses, Money, Clothes etc. हमें यह सब Limit में रखने चाहिए। हमें जितनी आवश्यकता हो उतना ही हम रखें, बाकी हमें गरीबों की सहायता में लगाना चाहिए। इस व्रत का पालन करने से समाज में समानता भी आती है और गरीब लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा उठता है।

दिशा-परिमाण व्रतः— इस व्रत में हम अलग- अलग दिशाओं (Different Directions) में जाने की सीमा बना लेते हैं। जैसा कि हम जानते है कि हम जितना अधिक घूमेंगे-फिरेंगे, उतना ही अधिक पाप कार्यों में संलग्न रहने की सम्भावना रहती है। अतः इस व्रत का उदेश्य यही है कि हम अपने को एक सीमा में रखकर पापों को कम कर लेते हैं।

भागोपभोग परिमाण व्रतः— इस व्रत में हम ऐसे व्यापारों (Business) का त्याग करते है, जिसमें ज्यादा हिंसा होती हो और भोजन, वस्त्र एवं उपयोग में लाने वाली वस्तुओं की सीमा करते हैं।

अनर्थदंड-विरमण व्रतः— इसमें हम उद्देश्य रहित (Purposeless) हिंसा का त्याग करते हैं।

सामायिक व्रतः— जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के लिए सामायिक एक बहुत बड़ा साधन है, अतः श्रावक को 48 मिनट एक सामायिक अवश्य करनी चाहिए।

देशावकाशिक व्रतः— इस व्रत में हम कुछ समय के लिए अपने नियमों की सीमा को अधिक संकुचित (Tight) कर देते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि हॉकी या फुटबाल मैच में वैसे तो खिलाड़ी पूरे मैदान में खेलते हैं, परन्तु जब Penalty लगाना होता है तो सारे खिलाड़ी गोल Post की तरफ आ जाते है, और Playing Area बहुत Tight हो जाता है, ये ही स्थिति इस व्रत की है।

पौषध व्रतः— इस व्रत के अंतर्गत हम 24 घंटे के लिए कुछ भी नहीं खाते हैं और धर्म-स्थान या एकान्त वास में रहकर, ससांर की सभी पाप क्रियाओं से मुक्ति पाकर साधु की तरह जीवन जीते हैं।

अतिथि संविभाग व्रतः— इस व्रत के अंतर्गत हम किसी भी सुपात्र को निर्दोष दान देने की भावना रखते हैं।

Note : साधु-साध्वी के पांच महाव्रतों में पाप-त्याग तीन करण व तीन योग से होता है। जबकि श्रावक-श्राविका के व्रतों में अलग-अलग करण व योग होते हैं।

कर्म आठ

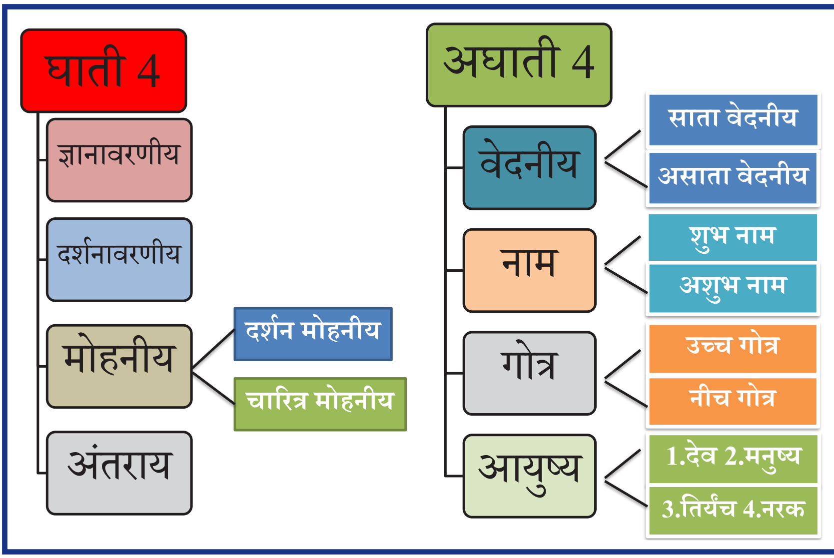

मिथ्यात्व, कषाय आदि कारणों से, जीव-आत्मा द्वारा संचित सूक्ष्म रज (धूलि) कर्म कहलाती है। जीव के दो भेद हैं- सिद्ध और संसारी। ये दो भेद कर्मों के कारण हैं। सिद्ध जीव सर्व कर्मों से रहित होने से शाश्वत मोक्ष में विराजमान हैं। संसारी जीव आठ कर्मों से बंधे हैं। जैसे सूर्य पर बादल छा जाते हैं, दीवार पर रोगन चिपक जाता है और चिकने शरीर पर धूलि जम

जाती है, उसी प्रकार यह जीवात्मा कर्मरूपी आवरण से ढ़क जाती है। कर्म अपने स्वभाव के अनुसार जीव को विभिन्न फल देते हैं।

जीव-आत्मा को कर्म करने व उसका फल भोगने के लिए शरीर के माध्यम की जरूरत होती है। शरीर में स्थित मन-वचन-काया रूपी तीन योगों के स्पन्दन (हलचल) से कर्मरूपी धूली आत्म-प्रदेशों की तरफ आकृष्ट होती है और राग-द्वेष का बल पाकर वह आत्मा से चिपक जाती है। निश्चित समय आने पर कर्म आत्मा को शुभ-अशुभ फल देते हैं।

आत्मा के आठ गुण हैं—

1. अनन्त ज्ञान, 2. अनन्त दर्शन, 3. अव्याबाध (बाधा-रहित) सुख, 4. क्षायिक सम्यक्त्व, 5. अटल अवगाहना, 6. अमूर्तता, 7. अगुरुलघु भाव, 8. अनन्त बल।

इनका आवरण करने वाले कर्म भी क्रमशः आठ हैं—

1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयु 6. नाम, 7. गोत्र, 8. अन्तराय।

इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

ज्ञानावरणीय कर्म— आत्मा अनन्त ज्ञान का पुंज है। यह कर्म आत्मा के ज्ञान-गुण (विशेष ज्ञान) पर पर्दा डालता है। इसका स्वभाव आंखों पर बंधी पट्टी के समान है।

दर्शनावरणीय कर्म— यह आत्मा के दर्शन-गुण (सामान्य ज्ञान) को रोकता है। इसका स्वभाव राजा का दर्शन रोकने वाले द्वारपाल के तुल्य है। नींद भी इसी कर्म के उदय से आती है।

वेदनीय कर्म— यह आत्मा को भौतिक सुख-दुख प्रदान करता है। इसका स्वभाव शहद से लिपटी हुई तलवार के समान है। पहले शहद का मजा, फिर जीभ कटने का दुःख। ऐसे ही सांसारिक सुख-भोग हैं।

मोहनीय कर्म— यह आत्मा के स्वरूप-दर्शन और स्वरूप-प्राप्ति में बाधा डालता है। सम्यक् श्रद्धा को रोकता है और चारित्र-प्राप्ति नहीं होने देता। इसका स्वभाव मदिरा के समान है। मिथ्यात्व, चार कषाय, विषय-वासना सब इसी के कारण हैं। यह सारे कर्मों का सेनापति है।

आयु कर्म— आत्मा स्वभाव से अजर-अमर है, किन्तु इस कर्म के कारण आत्मा शरीर-रूप में जन्मती-मरती है। इसके होने से ही शरीर जीवित रहता है और इसके समाप्त होने से मृत्यु हो जाती है। इसका स्वभाव कारागार (जेल) के समान है।

नाम कर्म— यह आत्मा को अनेक प्रकार के शरीर, इन्द्रिय, अंगोपांग, संस्थान (आकार), वर्ण आदि प्रदान करता है। इसका स्वभाव चित्रकार के तुल्य है।

गोत्र कर्म— यह आत्मा को ऊंचे, नीचे अनेकविध कुलों में जन्म दिलाता है। इसका स्वभाव कुम्हार के समान है। कुम्हार अच्छे बुरे दोनों प्रकार के घड़े बनाता है, ऐसे ही यह कर्म है।

अन्तराय कर्म— यह आत्मा की दान, लाभ, भोग, उपभोग और बल-रूप शक्तियों में बाधा डालता है। इसका स्वभाव राज-भण्डारी (खजांची) के तुल्य है।

इन आठ कर्मों में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय, ये चार कर्म आत्मा के मूल गुणों का घात करते हैं, इसलिए ये **घाती कर्म** कहलाते हैं। इनको नष्ट करने के उपरान्त केवल-ज्ञान की प्राप्ति होती है। शेष चार कर्म **अघाती** हैं। ये शरीर से सम्बन्ध रखते हैं। ये केवल-ज्ञान होने में बाधा नहीं डालते। केवली भगवान् की आयु पूरी होने पर ये चारों स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

प्राण दस

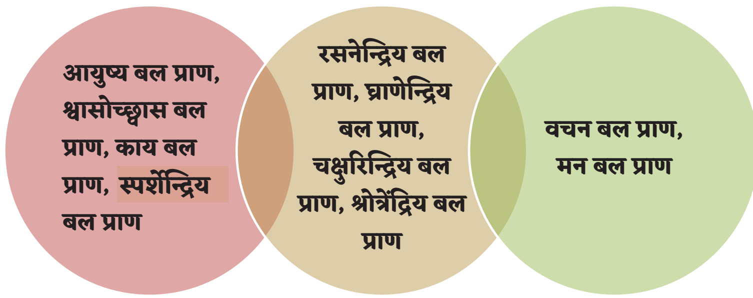

साधारण बोलचाल में प्राण का अर्थ साँसों से अथवा शरीर में आत्मा के रहने से लगा लिया जाता है। प्राण निकलने का अर्थ साधारणतया यह लिया जाता है कि शरीर से आत्मा निकल गयी है। यह प्राण की बड़ी स्थूल (मोटी) व्याख्या है। जैन दर्शन के अनुसार जीवन की मूल शक्तियों को प्राण कहते हैं। जिस शक्ति के द्वारा पाँचों इन्द्रियाँ काम करती हैं, तीनों योग (मन, वचन, काया) चलते हैं, सांस लेने व छोड़ने की ताकत आती है, तथा आत्मा शरीर में टिकी रहती है, उसे प्राण कहते हैं। इसके 10 भेद हैं।

1. श्रोत्रेन्द्रिय-बल प्राण
2. चक्षुरिन्द्रिय-बल प्राण,
3. घ्राणेन्द्रिय-बल प्राण
4. रसनेन्द्रिय-बल प्राण
5. स्पर्शेन्द्रिय-बल प्राण
6. मन-बल प्राण,
7. वचन-बल प्राण
8. काय-बल प्राण
9. श्वासोच्छ्वास-बल प्राण
10. आयुष्य-बल प्राण

सुविधा के लिए इनको ऐसे भी याद कर लेते हैं—

5 इन्द्रिय के, 3 मन वचन काया के, 1 श्वासोच्छ्वास और 1 आयुष्य बल के प्राण।

पाँच इन्द्रियों के बल प्राण इन इन्द्रियों की काम करने की शक्तियाँ हैं। जैसे श्रोत्रेन्द्रिय के साथ सुनने की शक्ति इस इन्द्रिय का बल-प्राण है। यदि कोई व्यक्ति बहरा हो जाता है, तो उसके कान तो मौजूद हैं, पर उसका बल-प्राण खत्म हो जाने के कारण वह कान का उपयोग नहीं कर सकता। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि बहरे मनुष्य को (चाहे जन्म से ही बहरा अथवा बाद में) पंचेन्द्रिय ही कहा जायेगा; क्योंकि कान की संरचना उसमें मौजूद है। उसे चार इन्द्रियों वाला नहीं कहंगे, अपितु यह कहेंगे कि इसका कान होने के बावजूद भी श्रोत्रेन्द्रिय-बल-प्राण नहीं है।

इसी प्रकार पाँचों इन्द्रियों के विषय में समझना। कोमा तथा बेहोशी की हालत में मनोबल-प्राण क्षीण या खत्म हो जाता है, तब केवल श्वासोच्छ्वास और आयुष्य-बल शेष रह जाता है। कभी-कभी श्वास, हृदय-गति बंद हो जाने पर भी, मनुष्य को जीवित मानने के उदाहरण सुने हैं। वहाँ केवल आयुष्य बल रहने से ही वह जी पाता है।

बल-प्राण की तुलना हम ऐसे कर सकते हैं - जैसे टेलीफोन का उपकरण है, एक्सचेंज से कनैक्शन भी है, परंतु डायलटोन गायब हो जाने पर फोन मृत कहलाता है तथा उसका होना, न होना बराबर है, इसी प्रकार ये 10 बल-प्राण अपने-अपने उपकरणों की डायलटोन हैं यानि उनका इलैक्ट्रिक करण्ट हैं।

एकेन्द्रिय जीव में कम-से-कम चार (अर्थात् 1 स्पर्शेन्द्रिय का, 1 काया का, 1 श्वासोच्छ्वास का और 1 आयुष्य का) बल-प्राण तो होते ही हैं। यह जीव कहलाने की न्यूनतम शर्त है।

इसी प्रकार बेइन्द्रियों में 6, तेइन्द्रियों में 7, चउरिन्द्रियों में 8, असंज्ञी (बिना मन वाले) पंचेन्द्रियों में 9 तथा शेष सभी संज्ञी पंचेन्द्रियों में 10 बल-प्राण होते हैं।

जैन धर्म में हिंसा-अहिंसा की व्याख्या इन 10 बल-प्राणों पर ही आधारित है। किसी भी जीव के, किसी भी बल-प्राण को, मन, वचन अथवा काया से समाप्त करना या पीड़ा पहुँचाना हिंसा कहलाता है। जितने ज्यादा बल-प्राण को कष्ट देंगे या समाप्त करेंगे, मन में उतने ही अधिक क्रूर परिणाम लाने होंगे तथा हम उतने ही अधिक अपराधी (पापी) ठहराए जाएँगे। इसलिए जैन धर्म के अनुसार, एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक की हिंसा, आगे-आगे अधिक पाप का कारण मानी जाती है। किसी भी प्राणी को जीवन से रहित कर देने का अर्थ है आयुष्य बल-प्राण सहित, सभी प्राणों से उसे रहित कर देना, जो कि पूर्ण हिंसा का कारण मानी जाती है।

लेश्या छः

जिस प्रकार पानी साफ-सुथरा व पारदर्शी होता है और उसमें काली, पीली, हरी रंग की गोली डाल दी जाये, तो पानी रंगीन हो जाता है। इसी प्रकार मन, वचन और काया की हलचलों (योग) पर जब कषायों का रंग चढ़ जाता है, तो उस कषाय-रंजित योग की संयुक्त अवस्था को लेश्या कहा जाता है। इसके दो भेद हैं - द्रव्य लेश्या, भाव लेश्या।

1. कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कपोत लेश्या,

4. तेजो लेश्या, 5. पद्म लेश्या, 6. शुक्ल लेश्या।

लेश्या शब्द के दो अर्थ हैं – 1 चमकना, 2 चिपकना या चिपकाना।

चमकने का सम्बन्ध द्रव्य लेश्या से तथा चिपकने या चिपकाने का सम्बन्ध भाव लेश्या से है। पुद्गल (पदार्थ)-रूप लेश्या द्रव्य-लेश्या, तथा भावों के उतार-चढ़ाव रूप लेश्या भाव-लेश्या है। मोटे तौर पर लेश्या के विषय में कहा जा सकता है कि विचारों की अच्छाई-बुराई को तीन- तीन रंगों के माध्यम से बतलाना लेश्या है। हमारे मन के भावों को मुख्य तौर पर अच्छे तथा बुरे या शुभ तथा अशुभ दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। फिर प्रत्येक भाग की तीन-तीन श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं।

अशुभतम, अशुभतर, अशुभ, शुभ, शुभतर, शुभतम, इस प्रकार भावों के कुल छह प्रकार बन गये। उन छहों को छह नाम दे दिये गये तथा उनके 6 रंग भी निर्धारित कर दिये गये, जो इस प्रकार हैं -

	विचारों की श्रेणी	लेश्या का नाम	रंग
1.	सर्वाधिक बुरे विचार	कृष्ण लेश्या	काला
2.	मध्यम रूप से बुरे विचार	नील लेश्या	नीला
3.	हल्के रूप से बुरे विचार	कपोत लेश्या	कबूतरी
4.	हल्के रूप से अच्छे विचार	तेजो लेश्या	लाल
5.	मध्यम रूप से अच्छे विचार	पद्म लेश्या	पीला
6.	उत्कृष्ट रूप से अच्छे विचार	शुक्ल लेश्या	सफेद

इस प्रकार हमारे भावों की श्रेणी को भाव लेश्या कहा गया है। उन भावों के उतार-चढ़ाव के कारण शरीर के आसपास के वातावरण, तथा आभा-मण्डल में स्थित पुद्गलों (कणों) के रंग में जो परिवर्तन होता है, उसे द्रव्य लेश्या कहते हैं। इसी कारण इसका 'चमकना' अर्थ सार्थक होता है।

भाव-लेश्या शब्द मन के कर्म-बंधक परिणामों के लिए प्रयुक्त होता है। कर्मों को आत्मा से चिपकाने में भाव लेश्या अच्छे या बुरे गोंद का कार्य करती है।

योग अर्थात् मन, वचन, काया की हलचल के साथ जब कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) का मिश्रण हो जाता है, तो आत्मप्रदेशों के आस-पास रहे हुए कर्म-पुद्गल (परमाणु-कण) आत्मा से चिपक जाते हैं। वास्तव में इस योग एवं कषाय के मिश्रण का ही नाम लेश्या है। कषायों की तीव्रता में लेश्या अशुभ तथा कषायों की मंदता में शुभ होती है। फिर तीव्रतम, तीव्रतर तथा तीव्र कषायों के अनुसार तीन अशुभ लेश्याएँ तथा मंद, कुछ अधिक मंद तथा मंदतम कषायों के अनुसार तीन शुभ लेश्याएँ होती हैं। तेज क्रोध में जब आँखे लाल हो जाती हैं, तब उसको लाल-पीला होना कहा जाता है, इसी प्रकार भाव लेश्या को द्रव्य लेश्या एवं उसके सम्बन्धित रंग से प्रकट किया जाता है।

छहों लेश्याओं को समझाने के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं, उनमें से 'जामुन' वाला उदाहरण सर्वाधिक विख्यात है। आपने स्थानकों अथवा कुछ घरों में टंगा हुआ षट्लेश्या का वह चित्र देखा होगा, जिसमें एक बड़े जामुन या आम के पेड़ के ऊपर तथा नीचे कुल 6 व्यक्ति जामुन तोड़ते या खाते हुए दिखाये गये हैं।

वह उदाहरण इस प्रकार हैं—

छह अलग-अलग लेश्या (भाव-परिणामों) वाले व्यक्ति कुल्हाड़ी लेकर वन में गये। उन्होंने एक जामुन का पेड़ देखा तथा उन्हें जामुन खाने की इच्छा हुई।

- एक व्यक्ति ने कहा— इस पेड़ को जड़ से काट दें, फिर जामुन खायेंगे।
- दूसरा बोला— पेड़ को जड़ से काटने की क्या जरूरत है, बड़ी-बड़ी शाखाएँ काट लो।
- तीसरा बोला— टहनियों को ही काट लो
- चौथा बोला— ये टहनियाँ- वहनियाँ काटने के लफड़े में काहे को पड़ते हो, पेड़ या टहनियाँ थोड़े ही खानी हैं। चलो, इस पर चढ़कर सारे

जामुन के गुच्छे तोड़ लो, फिर बैठकर मजे से खायेंगे।

- पाँचवाँ बोला– क्यों भई ! कच्चे-पक्के, सड़े-गले सारे ही जामुन खाने हैं क्या ? फिर, इतने जामुनों का हम क्या करेंगे? ऐसा करते हैं कि पर्याप्त मात्रा में पके-पके जामुन तोड़ लो, फिर आराम से बैठकर, खाकर अपना पेट भरेंगे।

- छठा जो शान्त-सा अलग ही खड़ा था, वह गम्भीर-सा व्यक्ति बोला– भई! क्यों इतना सब कुछ करते हो? हमें पेट भरने से ही तो मतलब है। यह देखो, पेड़ के नीचे, चारों ओर कितने ताजे-ताजे, मोटे-मोटे जामुन बिखरे पड़े हैं। इन्हें ही उठाओ और खाकर अपना काम चलाओ।

अब आप समझ ही गये होंगे विचारों की अच्छी-बुरी श्रेणी को। पेड़ के बारे में छहों के अलग-अलग विचार हैं। पहले वाला पेड़ के प्रति अधिक क्रूर नजर आता है। दूसरे वाला कुछ कम और छठा तो पेड़ को हाथ भी नहीं लगाना चाहता, हथियार की तो बात ही क्या? इन छहों की लेश्याएँ क्रमशः कृष्ण, नील, कपोत, तेजो, पद्म तथा शुक्ल लेश्या हैं।

चारित्र पांच

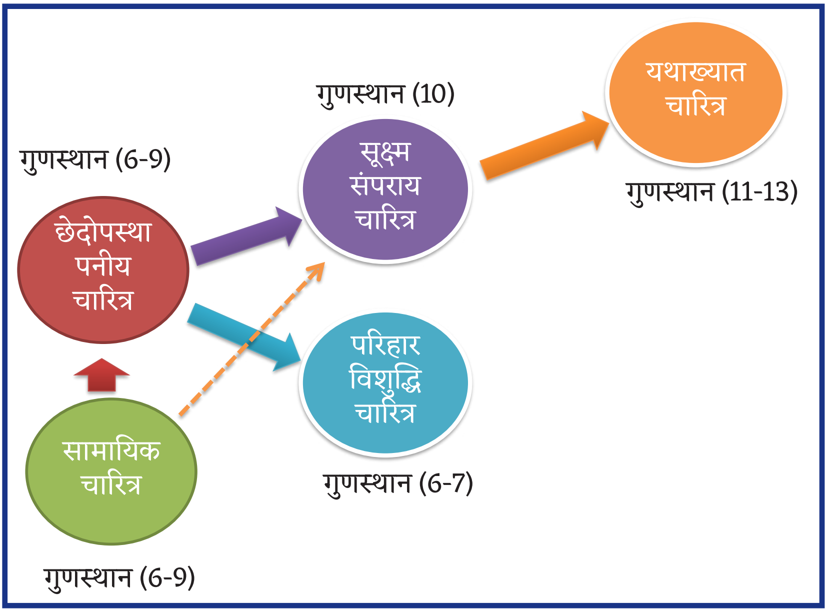

चारित्र— मोक्ष की प्राप्ति के लिए, आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने का नाम ही चारित्र है।

इसके पांच प्रकार हैं, यथाः—

1.सामायिक चारित्र 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र 3. परिहार-विशुद्धि चारित्र 4. सूक्ष्म संपराय चारित्र 5. यथाख्यात चारित्र

1. सामायिक चारित्र— 18 पापों का त्याग सामायिक है। श्रावक दो घड़ी (48 मिनट) के लिए अथवा कुछ अधिक समय के लिए, परन्तु साधु-साध्वी पूरे जीवन के लिए सामायिक अंगीकार करते हैं। साधु-समाज के लिए यही आचार-संहिता है। साधु दीक्षा लेते समय 'करेमि भंते' का पाठ उच्चारण करता है तथा 5 महाव्रतों की प्रतिज्ञा करता है। ऐसा करके वह सामायिक चारित्र ही अंगीकार करता है।

2. छेदोपस्थापनीय चारित्र– जैसे धान को एक स्थान से उखाड़कर, पुनः दूसरे स्थान पर रोपित करते हैं, उसी प्रकार सामायिक चारित्र को संशोधित करके छेदोस्थापनीय चारित्र दिया जाता है। पहले और चौबीसवें तीर्थंकरों के समय में ही यह चारित्र होता है। यह भी मूलतया तो सामायिक चारित्र ही है। सामायिक चारित्र पर, कुछ समय बाद, जब पक्की मोहर लग जाती है, तो छेदोपस्थापनीय चारित्र कहलाता है। इसे बड़ी दीक्षा भी कहते हैं। वर्तमान समय में यह व्यवस्था है कि नवदीक्षित साधु-साध्वी को प्रारम्भ में सामायिक चारित्र दिया जाता है, ताकि वह साधु के नियम एवं व्यवस्थाओं को अच्छी तरह देख, परख और आजमा ले और बाद में कम से कम 7 दिन और अधिक से अधिक 6 महीने बाद यह छेदोस्थापनीय चारित्र दिया जाता है।

3. परिहार-विशुद्धि चारित्र– परिहार अर्थात् संघ व्यवस्था से अलग रहकर, विशुद्धि अर्थात् आत्मा का विशेष शोधन करने वाला चारित्र। जिस प्रकार पर्वतारोही दल आम आदमियों में से निकलकर अपने कुछ अधिक साहस एवं शक्ति के कारण ऊँचे पर्वत-शिखरों का आरोहण करके, पुनः धरातल पर आ जाते हैं। उसी प्रकार विशिष्ट शक्ति वाले साधु, अपना अतिरिक्त दल बनाकर, कुछ समय के लिए संघ एवं समाज से पृथक् होकर, विशिष्ट कोटि की साधना कर, वापस संघ में लौट आते हैं। उनकी इस साधना या चारित्र का नाम 'परिहार-विशुद्धि चारित्र' है।

4. सूक्ष्म संपराय चारित्र– दसवें गुणस्थान (सूक्ष्म संपराय गुणस्थान) के चारित्र को सूक्ष्म संपराय चारित्र कहते हैं। जैसे किसी मकान को झाड़ू देकर साफ करने के बाद, उसमें सूक्ष्म धूल ही बाकी रह जाती है, इसी प्रकार जिस समय सूक्ष्म लोभ के अतिरिक्त बाकी सब कषाय एवं मोहनीय कर्म की सभी प्रवृत्तियाँ, पूर्णरूप से नष्ट या दब चुकी होती हैं, उस समय की अवस्था को चारित्र की दृष्टि से सूक्ष्म संपराय चारित्र कहा जाता है।

5. यथाख्यात चारित्र– यथा-जिस प्रकार, आख्यात - सर्वज्ञ भगवान् ने कहा है, उस पूर्णरूपेण कषाय-रहित अवस्था को प्राप्त कर लेना यथाख्यात चारित्र कहलाता है। इस चारित्र को वीतराग चारित्र भी कहते हैं।

जैसा कि चारित्र की परिभाषा में बताया था कि मोक्ष-मंजिल की प्राप्ति के लिए आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने का नाम चारित्र है। अब जीव को मंजिल प्राप्त हो गयी, तो चलने का कोई प्रयोजन नहीं। अतः मोक्ष-प्राप्ति के बाद चारित्र समाप्त हो जाता है। इसीलिये सिद्धों में 5 चारित्र में से कोई भी चारित्र नहीं पाया जाता।

प्रत्याख्यान-तप

भोजन की मात्रा को सीमित करना तथा पाप-युक्त कार्यों का त्याग करना प्रत्याख्यान कहलाता है। इसे तप या तपस्या भी कहते हैं।

प्रत्याख्यान के अनेक दृष्टियों से अनेक भेद हैं। जैन-साधना-पद्धति बड़ी कठोर है। इसमें शरीर की सुविधाएं और संसार के ऐशो-आराम का त्याग किया जाता है। यह शरीर को साधना की भट्टी में तपाकर सच्चा आत्मिक वैभव प्राप्त करने की प्रक्रिया है। कई विचारकों ने कहा है कि जैनों की तपस्या हड्डियों की लड़ाई है अर्थात् इसे करने के लिए ऊपर से नीचे तक शरीर का पूरा जोर लगाना पड़ता है। जैन शास्त्रों में अनेक प्रकार की तपस्याओं का वर्णन आता है, यथाः—

1. रात्रि-चौविहारः— सूर्यास्त के पश्चात् सम्पूर्ण रात्रि तक कुछ भी न खाना, न पीना।

2. नवकारसीः— सूर्योदय के पश्चात् 48 मिनट तक कुछ भी नहीं खाना-पीना।

3. पौरसीः— सूर्योदय के पश्चात् एक प्रहर यानि दिन (Time duration from Sunrise to Sunset) का 1/4 भाग तक कुछ भी न खाना-पीना।

4. नीवीः— नमक, चीनी आदि से रहित छाछ में, सूखी रोटी भिगोकर एक बार खाना। पूर्व-पश्चात् प्रासुक पानी ले सकते हैं।

5. दिवस-चरिमः— सूर्यास्त से 24, 48 आदि मिन्ट पहले, सभी अन्न-जल का, रात्रि-भर के लिए त्याग करना।

6. एकाशनाः— दिन में केवल एक बार, एक जगह बैठकर भोजन करना। पहले और बाद में प्रासुक पानी पी सकते हैं।

7. एकल ठाणाः– दिन में केवल एक बार, एक ही जगह बैठ कर भोजन और जल ग्रहण करना।

8. आयम्बिलः– घी एवं नमक- रहित चने, रोटी या मुरमुरे (चावल के परमल) पानी में भिगोकर दिन में केवल एक बार खाना। पहले और बाद में प्रासुक पानी पी सकते हैं।

9. उपवासः– दिन-भर केवल प्रासुक पानी के सिवाय, सभी प्रकार के खाद्य, पेय पदार्थों का त्याग करना।

10. पौषधः– सम्पूर्ण दिन (24 घण्टे) सामायिक की वेषभूषा में उपवास करना।

11. अभिग्रहः– मन में कोई प्रतिज्ञा गुप्त रूप से धारण करना। वह सफल हो जाए, तो भोजन करना, अन्यथा व्रत करना।

12. संथाराः– जब साधक का शरीर सर्वथा असमर्थ हो जाए, उठने, बैठने आदि आवश्यक क्रियाएं करने में भी पीड़ा का अनुभव करने लगे तथा जीवन का अन्तिम क्षण समीप दिखाई देने लगे, तब जीवन-भर के सभी दोषों/पापों की आलोचना करके, सब जीवों से अपनी भूल-चूक की क्षमा-याचना करके, सब प्रकार के भोजन (या पानी भी) का त्याग करके, मृत्यु पर्यन्त समता व समाधि के भावों में रहना संथारा कहलाता है।

जैन इतिहास में 1, 2, 3 दिन से लेकर 1, 2 या 3 मास तक के संथारों का विवरण मिलता है। सन् 1987 में सोनीपत मण्डी ,हरियाणा में घोर तपस्वी श्री बदरी प्रसाद जी म. ने 72 दिन का ऐतिहासिक संथारा किया था।)

संथारा सम्बंधी कुछ स्पष्टीकरण :

कई लोग ये कुशंका करते हैं कि संथारा करना आत्महत्या है। यह उनका कोरा भ्रम है। आत्महत्या के मूल में क्रोध या वैर की भावना होती है, भय और बदनामी का डर होता है या फिर अतृप्त काम-वासना का प्रसंग रहता

है। इसके विपरीत संथारा मृत्यु की एक अति उत्तम कला है। इसमें किसी प्रकार की लालसा, भय या जोर-जबरदस्ती की भावना नहीं होती। प्रत्येक जैन साधक,संथारा प्राप्त करने की उत्तम भावना (मनोरथ) भाता है।

जैन शास्त्रों में तप के अन्य प्रकार से भी दो भेद किए गए हैंः—

1. बाह्य तप (शरीर द्वारा साध्य) 2. आभ्यन्तर तप (मन द्वारा साध्य)

बाह्य तप के 6 भेद हैंः—

1.अनशन (भोजन का त्याग), 2. ऊनोदरी (भूख से कम खाना), 3. भिक्षाचरी (भिक्षा में या थाली में जो आए, समभाव से खाना), 4. रस-परित्याग (भोजन में रस लेकर न खाना), 5. काय-क्लेश (अनेकविध आसनों व सदी-गर्मी की आतापना से शरीर को साधना), 6. प्रतिसंलीनता (शरीर व इन्द्रियों को वश में रखना)।

आभ्यन्तर तप के 6 भेदः—

1. प्रायश्चित (त्रुटि/अपराध का दण्ड स्वीकार करना), 2. विनय, 3. वैयावृत्य (सेवा), 4. स्वाध्याय (धर्मग्रन्थों का अध्ययन), 5. ध्यान, 6. व्युत्सर्ग (शरीर-मोह कषाय, उपकरणों का त्याग)

पर्यावरण की सुरक्षा

जीवन जीने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। हमारा पर्यावरण पृथ्वी, जल, वायु तथा वनस्पति की सुरक्षा होने से सुरक्षित रहता है। आइए कुछ विचार करें -

पृथ्वी: यह सभी जीवों की मां है। सभी के जीवन का आधार है। अतः खान नहीं खोदना, जहरीली दवाइयां नहीं छिड़कना।

जल : जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती। दाँत साफ करते समय, हाथ-मुंह धोते समय, शेव करते समय नल को खुला न छोड़ें। स्नान करने में, फर्श की धुलाई में, वाहनों की धुलाई में सीमित पानी बरतें। छत पर पानी की टंकी भर जाए, तो तुरंत बंद करें।

वायु : प्राण-वायु (oxygen) के आधार से जीवन चलता है। अतः वायु को दूषित न करें। खेतों में और कूड़े के ढेर में आग लगाने से, पेट्रोल-डीजल की गाड़ी चलाने से, आतिशबाजी करने से वायु प्रदूषित होती है। दूषित वायु अनेक रोगों को जन्म देती है।

वनस्पति : पेड़-पौधे धरती-माता के श्रृंगार हैं। ये ही धरती पर ऑक्सीजन

के एकमात्र स्रोत हैं। एक वृक्ष अपने लगभग 50 वर्ष के जीवन काल में 5.50 लाख रु. की ऑक्सीजन छोड़ता है और करीब 10 लाख रु. का प्रदूषण रोकता हैं। हमें चाहिए कि वृक्षों को न काटें, न जलाएं, फूल, डालियों को न तोड़े, अपितु खाद पानी देकर उनकी वृद्धि करें।

जल, मिट्टी, वनस्पति और वायु के मेल से हमारा पर्यावरण बनता है। जितनी अधिक इनकी सुरक्षा होगी, जन-जीवन भी उतना ही सुरक्षित और चिरजीवी होगा।

याद रखेंः

- घटते पानी का कर लो ख्याल : इसकी कर लो सार-संभाल
- जो बूंद-बूंद ना बरतोगे, तो बूंद-बूंद को तरसोगे।
- Save Water : Save Life. Water is Invaluable: Protect it., More Water: More Food.
- Water is Life: Live Long for Socio-economic Development.

धूम्रपान, शराब एवं ड्रग्स के दुष्परिणाम

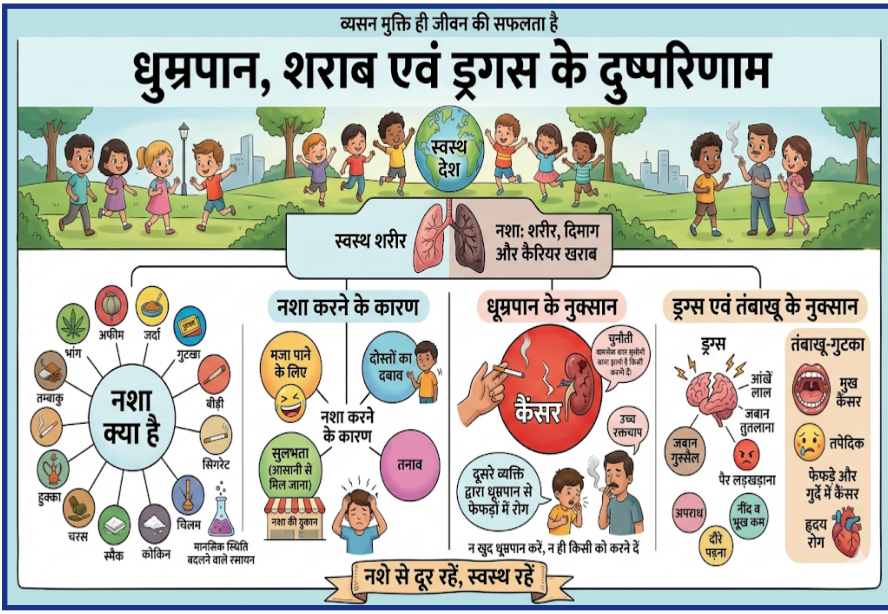

किसी भी देश का विकास उसके नागरिकों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। लेकिन नशे की बुराई के कारण यदि मानव का स्वास्थ्य खराब होगा तो देश का भी विकास नहीं हो सकता। नशा एक ऐसी बुरी आदत है, जो व्यक्ति को तन-मन-धन से खोखला कर देता है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और उसके परिवार की आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जाती है। आज कल अक्सर ये देखा जा रहा है कि युवा वर्ग इसकी चपेट में दिनों-दिन आ रहा है। वह तरह-तरह के नशे जैसे- तम्बाकू, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट और शराब के चंगुल में फंसता जा रहा है। जिसके कारण उनका शरीर, दिमाग और कैरियर खराब हो रहा है।

नशा क्या है:-

मानसिक स्थिति को बदल देने वाले रसायन, जो किसी को नींद या नशे की हालत में ला दे। इसके लिए भांग, अफीम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकु, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, चिलम, चरस, स्मैक, कोकिन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है।

नशा करने का कारण –

सबसे पहले हम यह जाने कि नशाखोरी के कारण क्या हैं ?

अधिकतर लोग मजा पाने के लिए नशा करते हैं। दरअसल नशा चीज ही ऐसी है कि जो खून में जाते ही आदमी को खुशी और स्फूर्ति का एहसास कराता है। दूसरे कुछ लोग अपने दोस्तों के दबाव में आकर नशा करने लगते हैं। तीसरा कारण है इसकी सुलभता यानि पहले जिस शराब को खरीदने के लिए लोगों को दूर जाना पड़ता था, अब वह आसानी से मिल जाती है। जगह-जगह ठेके खुले हैं। चौथा कारण है तनाव, जिसके कारण इंसान नशा करता है।

किसी भी प्रकार का नशा हमारी आत्मा के उत्थान में तो बाधक है ही ,यह हमारे शरीर पर, परिवार पर और पूर्ण जीवन पर व्यापक दुष्प्रभाव डालता है :

नशे के नुक्सान:

धूम्रपान के नुक्सान: हम सभी जानते हैं कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी होती है और यह चेतावनी सभी तम्बाकू उत्पादों पर अनिवार्य रूप से लिखी होती है और लगभग सभी को यह पता भी है। दूसरे व्यक्तियों द्वारा धूम्रपान करने से भी सामने वाले व्यक्ति के फेफड़ों में कैंसर और अन्य रोग हो सकते हैं। इसलिए न खुद धूम्रपान करें और न ही किसी को करने दें।

ड्रग्स के नुक्सान : कोकीन, चरस, अफीम ऐसे उत्तेजना लाने वाले पदार्थ है, जिसके प्रभाव में व्यक्ति अपराध कर बैठता है। इनके सेवन से व्यक्ति पागल तथा सुप्तावस्था में हो जाता है। नशा करने के बाद आंखें लाल, जबान तुतलाना, पसीना, गुस्सैल या अतिरिक्त खुशी, पैर लड़खड़ाना, शरीर टूटना, नींद व भूख कम होना, घबराहट होना, उबासी आना, लूज मोशन, दौरे पड़ना आदि तकलीफ बढ़ जाती हैं।

तंबाकू-गुटके के नुकसानः तंबाकू गुटके के सेवन से तपेदिक, निमोनिया और साँस की बीमारियों सहित मुख, फेफड़े और गुर्दे में कैंसर होने की संभावनाएं रहती हैं। इससे हृदय रोग और उच्च रक्तचाप की शिकायत भी रहती है।

शराब के नुकसानः डॉक्टरों का कहना है कि शराब के सेवन से पेट और लीवर खराब होते हैं। इससे मुख में छाले पड़ सकते हैं और पेट का कैंसर हो सकता है। पेट की सतही नलियों और रेशों पर इसका असर होता है। यह पेट की अन्तड़ियों को नुकसान पहुंचाती है। इससे अल्सर भी होता है, जिससे गले और पेट को जोड़ने वाली नली में सूजन आ जाती है और बाद में कैंसर भी हो सकता है।

इन जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचती है। इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता है और साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी भारी नुकसान पहुंचाता है। नशे के आदि व्यक्ति को समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता है। नशा करने वाला व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरूप हो जाता है व उसकी समाज एवं राष्ट्र के लिए उपादेयता शून्य हो जाती है। वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। इस अभिशाप से समय रहते मुक्ति पा लेने में ही मानव समाज की भलाई है। जो इसके चंगुल में फंस गया, वह स्वयं तो बर्बाद होता ही है, इसके साथ ही साथ उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है।

भ. महावीर के जीवन पर आधारित कहानियाँ

कहानी 1: "नन्हा मुनि अतिमुक्त"

बहुत समय पहले **पोलासपुरी नगरी** में एक राजा थे—**विजयपाल** और रानी थी—**श्रीदेवी**। उनके पुत्र का नाम था **अतिमुक्त कुमार**। वह बहुत ही बुद्धिमान, सरल और जिज्ञासु बालक था।

एक दिन की बात है। **गौतम स्वामी** भिक्षा के लिए नगरी में घूम रहे थे। अतिमुक्त ने उन्हें देखा और बहुत प्रसन्न हुआ। वह दौड़कर उनके पास गया और बोला— *"गुरुदेव, कृपया मेरे घर पधारिए।"*

उसने बड़े प्रेम और श्रद्धा से उन्हें भोजन (गोचरी) अर्पित किया।

जब गौतम स्वामी वापस जाने लगे, तो अतिमुक्त भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। चलते-चलते वह **भगवान् महावीर** के पास पहुँच गया।

वहाँ उसने भगवान् की मधुर वाणी सुनी। उनकी बातों ने उसके हृदय को छू लिया। छोटे से बालक के मन में **वैराग्य (संसार से अलग होने का भाव)** जाग उठा।

वह तुरंत घर लौटा और माता-पिता से बोला— *"मुझे दीक्षा लेकर मुनि बनना है।"*

माता-पिता चौंक गए। वे बोले— *"तुम अभी छोटे हो, तुम्हें धर्म की पूरी समझ नहीं है।"*

लेकिन अतिमुक्त ने बड़े ही चतुर और समझदारी भरे उत्तर दिए। उसकी बातें सुनकर माता-पिता को समझ आ गया कि यह कोई साधारण बालक

नहीं है। आखिरकार उन्होंने अनुमति दे दी। अतिमुक्त कुमार ने भगवान् महावीर के पास जाकर **दीक्षा ले ली** और बाल मुनि बन गए।

एक दिन **वर्षा ऋतु** का सुहावना मौसम था। चारों ओर ठंडी हवा चल रही थी और साफ पानी की धाराएँ बह रही थीं।

बाल मुनि अतिमुक्त का मन, जो अभी भी एक बच्चे जैसा ही था, खेलने को मचल उठा।

उन्होंने छोटे-छोटे पत्थरों से पानी को रोका, एक छोटा सा "तालाब" बनाया और उसमें अपना पात्र (कटोरी जैसा) रखकर उसे नाव की तरह तैराने लगे। वह खुशी से झूमने लगे—जैसे कोई छोटा बच्चा खेल रहा हो।

यह देखकर कुछ अन्य मुनियों को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने जाकर भगवान् महावीर से शिकायत की।

भगवान् महावीर मुस्कुराए और बोले— *"अतिमुक्त अभी बालक है। उसका मन स्वाभाविक रूप से खेल की ओर जाता है। लेकिन याद रखो,* ***यह अतिमुक्त मुनि बहुत महान आत्मा है*** *और इसी जीवन में* ***मोक्ष*** *प्राप्त करेगा।"*

यह सुनकर सभी मुनि शांत हो गए।

समय बीतता गया... अतिमुक्त मुनि ने धीरे-धीरे अपने मन को पूरी तरह संयम में ढाल लिया। उन्होंने वर्षों तक तप, साधना और नियमों का पालन किया।

अंत में, वही बालक—जो कभी पानी में खेल रहा था— **सिद्ध, बुद्ध और मुक्त आत्मा बन गया।**

सीख (Moral):

- बच्चों के प्रति प्रेम और समझदारी रखनी चाहिए।
- हर बच्चा अपनी गति से सीखता और आगे बढ़ता है।
- सही मार्गदर्शन और स्नेह से बच्चा महान ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है।

कहानी 2: "सच्ची तपस्या का मीठा फल"

बहुत समय पहले की बात है। भगवान् महावीर गहन तपस्या कर रहे थे। उन्होंने एक कठिन संकल्प (अभिग्रह) लिया था— *"जब तक मेरी शर्त पूरी नहीं होगी, मैं भोजन ग्रहण नहीं करूँगा।"*

दिन बीतते गए... एक दिन, दो दिन... फिर महीने बीत गए... देखते ही देखते **5 महीने और 24 दिन** बीत गए। आज छठे महीने का **25वाँ दिन** था।

भगवान् महावीर बहुत कमजोर हो चुके थे, लेकिन उनका मन अटल था। वे भिक्षा के लिए एक नगरी में गए।

उसी नगरी में एक घर था—धनावह सेठ का। उस घर के नीचे एक अंधेरे कक्ष (भूमिगृह) में **चंदना नाम की एक दुखी बालिका** कैद थी।

चंदना की हालत बहुत दयनीय थी— तीन दिन से भूखी-प्यासी, हाथों में हथकड़ियाँ, पैरों में बेड़ियाँ, सिर मुंडा हुआ, शरीर पर केवल एक साधारण वस्त्र, खाने के लिए सिर्फ **सूखे उड़द के बासी दाने**, उसी दिशा में भगवान् महावीर चल पड़े।

जैसे ही चंदना ने भगवान् को आते देखा, उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। उसे लगा— *"आज मेरा जीवन धन्य हो जाएगा!"*

लेकिन तभी उसने देखा कि भगवान् वापस मुड़ रहे हैं... उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसका दिल टूट गया।

तभी भगवान् महावीर ने अपनी प्रतिज्ञा की पूर्णता को जाना। वे वापस मुड़े और चंदना के पास पहुँचे।

चंदना ने कांपते हाथों से वे **सूखे, बासी उड़द के दाने** भगवान् को अर्पित किए।

भगवान् महावीर ने बहुत प्रसन्नता से उन सादे दानों को स्वीकार किया। **5 महीने 25 दिन की कठिन तपस्या का पारणा उन्होंने उसी सादे भोजन से किया।**

जैसे ही उन्होंने आहार ग्रहण किया— आकाश में देवताओं ने **दुंदुभि बजाई** और आवाज गूंज उठी— *“अहो दानम्! अहो दानम्!”* (वाह! कितना महान दान!)

इस प्रकार भगवान् महावीर का संकल्प पूरा हुआ और उन्होंने सिखाया कि सच्ची खुशी स्वाद में नहीं, बल्कि त्याग और संतोष में होती है।

सीख (Moral):

- हमें स्वाद के पीछे नहीं भागना चाहिए।
- सादा भोजन और संतोष ही सच्ची खुशी देता है।
- त्याग और संयम से जीवन महान बनता है।

भजन

अपना घर कैसा हो (तर्ज-उड़ते पंछी नील गगन में)

गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो,
ऐसा अपना घर हो...
कथनी-करनी रहे एक सी, नहीं जिसमें अंतर हो,
ऐसा अपना घर हो.....

विनय विवेक की नींव हो जिसमें, प्रेम प्यार की छत हो,
रहे मधुर व्यवहार सभी से, वचनों में अमृत हो,
सहनशीलता का हो आँगन, कटुता का न जहर हो-
ऐसा अपना घर हो..... 1

उस घर में मजबूत बने, विश्वास की सब दीवारें,
कठिन घड़ी में बन जाए सब एक दूजे के सहारे,
खिड़की हो अनुशासन की तो, विघटन का न असर हो-
ऐसा अपना घर हो..... 2

मर्यादा की चार दीवारी में सब मर्यादित हों,
सादा जीवन उच्च विचारों से सब ही प्रमुदित हों,
बड़े जनों का हो आदर, और छोटों पर भी मेहर हो-
ऐसा अपना घर हो..... 3

सेवा और सहयोग का जिसमें हो दरवाजा सुन्दर,
चित्र नहीं चारित्र की पूजा हो जिस घर के अंदर,
धर्म के सम्मुख रहे सदा सब, पापों से जहां डर हो-
ऐसा अपना घर हो..... 4

स्वच्छ आचरण की हो बहारें, ज्ञान प्रकाश हो पूरा,
मोक्ष लक्ष्य की सीढी हो तो, काम रहे ना अधूरा,
गौतम से प्रभु फरमाते हैं, अब तो शाश्वत घर हो-
ऐसा अपना घर हो..... 5

प्राकृत भाषा की वर्णमाला

अ — अम्बं (आम) Mango	आ — आसो (अश्व) Horse	इ — इंदू (इंदु-चंद्रमा) Moon	ई — ईसरो (ईश्वर) God
उ — उसभो (ऋषभ-बैल) Ox	ऊ — ऊलूखलं (ऊदूखल-ऊखल) Mortar	ए — एगदंतो (एकदंत-गणेश जी) Ganesh Ji	ओ — ओज्झरं (झरना) Waterfall
क — कण्णो (कर्ण-कान) Ear	ख — खेत्तं (क्षेत्र-खेत) Field	ग — गावी (गौ-गाय) Cow	घ — गिहं / घरं (गृह) Home
च — चक्कं (चक्र) Wheel	छ — छत्तं (छत्र-छतरी) Umbrella	ज — जलं (पानी) Water	झ — झाणी (ध्यानी) Dhayani

ट — टंको (टङ्क-पर्वत की चोटी) Top Mountain	ठ — ठाणू (स्थाणु-सूखा पेड़) Dry Tree	ड — डण्डो (दण्ड-डण्डा) Stick	ढ — ढक्का (नगाड़ा) Drum	ण — णाविओ (नापित-नाई) Barber
त — तेल्लं (तेल) Oil	थ — थणं (थन) Udder	द — दुद्धं (दुग्ध-दूध) Milk	ध — धणू (धनुष) Bow	न — नेत्तं (नेत्र-आँख) Eye
प — पुरिसो (पुरुष) Man	फ — फुल्लं (फूल-पुष्प) Flower	ब — बोरो (बदरी-बेर वृक्ष) Beri	भ — भल्लुओ (भालू) Bear	म — मिगो (मृग-हिरण) Deer

य — जाणं (यान) Vehicle	र — रिसहो (ऋषभ) Lord Rishabh Dev	ल — लोणं (लवण-नमक) Salt	व — वत्थं (वस्त्र-कपड़ा) Cloth
स — संखं (शंख) Shell	ह — हलं (हल) Plough		

नोट: प्राकृत भाषा में ऋ, ऐ, औ, अ:, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ वर्णों का प्रयोग नहीं होता

- ङ और ञ से किसी शब्द की शुरुआत नहीं होती।
- शब्द की आदि में प्रयुक्त य प्राय: ज हो जाता है।

प्राकृत भाषा में Sorry के लिए 'मिच्छामि दुक्कडं' कहें।

मिच्छामि दुक्कडं

Thankyou के लिए 'धण्णवाओ' कहें।

धण्णवाओ

1 व्यावहारिक वाक्य
(Practical Sentences)

व्यावहारिक वाक्य

1.	जय जिनेन्द्र !	Jai Jinendra!	जयउ जिणिंदो!
2.	शुभ प्रभात!	Good Morning!	सुप्पभायं अत्थु!
3.	शुभ मध्यान्ह!	Good Afternoon!	सुमज्झण्हं होउ!
4.	शुभ संध्या!	Good Evening!	सुसंझा भवउ!
5.	शुभ रात्रि!	Good Night!	सुरयणी हवेज्ज!
6.	नमस्ते!	I bow to you!	नमोत्थु ते!
7.	कैसे हो?	How are you?	कहं अणुहवसि?
8.	ठीक हूं।	I am fine.	कुसली अहं।
9.	भगवान की कृपा है।	Blessing of God.	पहुणो किवा अत्थि।
10.	बैठिए	Please, Sit here.	आसहि
11.	शाबाश	Very Good.	**साहु! साहु!**
12.	आपका धन्यवाद	Thankyou	धण्णवाओ भवंताणं
13.	माफ कीजिए।	Sorry	मिच्छामि दुक्कडं।

उपर्युक्त वाक्यों को याद करें व इनका प्रयोग करें।

1

जैन आगमों के मुख्य सूत्र

Chew Something New

(Short, Sweet & Powerful Chants)

1. सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु

सिद्ध भगवान् मुझे सिद्धि (मोक्ष) का रास्ता दिखाएँ।

O God! Lead me on the path of Self Realization.

2. नमो जिणाणं जियभयाणं

भय को जीतने वाले जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार।

I bow to the Jinas who are the conquerors of fear.

3. संती संतिकरे लोए

शांतिनाथ प्रभु दुनिया में शांति करने वाले हैं।

Lord Shantinath is the Founder of Peace in the world.

4. साहु गोयम! पण्णा ते

हे गौतम! आपकी बुद्धि महान् है।

Dear Gautam! Your wisdom is great.

5. मित्ती मे सव्वभूएसु

मेरी सभी जीवों से मित्रता है।

I am friendly towards all the living beings.

6. आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु

(हे प्रभो!) मुझे आरोग्य, शांति एवं धर्म प्रदान करें।

Dear God! Bless me with :-
1. Physical Health 2. Mental Peace 3. Spiritual Development

7. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं

अभय दान सबसे बड़ा दान है।

Giving Safety is the best of gifts.

8. समयं गोयम! मा पमायए

समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

Don't waste a single moment.

9. अप्पणा सच्चमेसेज्जा

स्वयं सत्य की खोज करो।

Discover the truth by yourself.

10. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

धर्म उत्कृष्ट मंगल है।

Spirituality is the best blessing.

11. जैनं जयतु शासनम्

जैन धर्म की जय हो।

May Jainism's Victory prevail.

12. अभयंकरे वीरे अणंतचक्खू

भगवान् महावीर अनंत ज्ञान के धारक एवं भय को दूर करने वाले थे।

Lord Mahavira had infinite knowledge &
was eliminator of fear.

1. जीवन में की गई जरा सी भूल तकदीर को बिगाड़ देती है।

2. धर्मात्मा तदबीर (पुरुषार्थ) को पहल दिया करते हैं, आलसी लोग तकदीर के भरोसे रह केवल आर्त्तध्यान करते हैं।

3. शरीर का मोह करने वाले आत्मा को भूल जाते हैं।

4. बादल खाली जा सकते हैं, औरत बांझ रह सकती है, पर साधु की सेवा खाली नहीं जाती।

5. आत्मा का पीहर प्रभु का घर है।

6. गुणी जनों/गुरुजनों की कठोर ताड़ना में भी फायदा है, जैसे समय पर हुई बरसात चाहे गर्जना करे या बिजली चमकाए, लाभकारी है।

7. गुणी जनों के आदर व निरादर से तकदीर बनती एवं बिगड़ती है।

8. बर्तन शीघ्र मंज सकते हैं, कपड़े शीघ्र साफ हो सकते हैं, पर आत्मा का मंजना कठिन है।

9. गुरु धारणा प्रथम दीक्षा है।

10. जिन्हें सुख प्रिय है, उनको ही दुख महसूस होता है।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन-शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना।

2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना।

3. सम्प्रदाय-निरपेक्ष धर्म की सही जानकारी देना।

4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना।

5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना।

6. भय-मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना।

भाग-3